हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति का संक्षिप्त इतिहास

समस्त भारतवर्ष में वर्तमान में दो संगीत पद्धतियाँ प्रचलित हैं जिन्हें हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति तथा कर्णाटक संगीत पद्धति की संज्ञा दी गई है। वर्तमान में हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति को उत्तर-भारतीय संगीत पद्धति भी कहा जाता है।

दक्षिण भारत के कर्णाटक एवं तमिलनाडु और आंध्रप्रदेश इत्यादि को छोड़कर भारत के अन्य सभी राज्यों में जो संगीत पद्धति प्रचलित है उसे हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति कहा जाता है। मुगलों के शासन काल में उत्तर भारत में प्रचलित हमारे प्राचीन और परम्परागत संगीत में व्यापक परिवर्त्तन कर दिया गया। जिसके परिणाम स्वरूप हमारी गायन शैली ध्रुपद-धमार आदि गायन शैली को पीछे ढकेलते हुए ख्याल, टप्पा, ठुमरी, गजल, दादरा आदि प्रचलित होकर प्रभावशाली बन गए। वर्तमान में हिन्दुस्तानी संगीत जिसे उत्तर-भारतीय संगीत भी कहा जाता है के अन्तर्गत उपर्युक्त गायन शैलियों के अतिरिक्त, भजन; लोकगीत आदि भी प्रचलित हैं। हिन्दुस्तानी-संगीत-पद्धति मुख्य रूप से, बंगाल, बिहार, उत्तरप्रदेश, उड़ीसा, हरियाणा, पंजाब, गुजरात, जम्मू-कश्मीर तथा महाराष्ट्र प्रान्तों में प्रचलित है।

हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति की विशेषताएँ-हिन्दुस्तानी संगीत

(i) पद्धति में 22 श्रुतियाँ मानी गई हैं।

(ii) इस पद्धति में एक सप्तक के अन्तर्गत 12 स्वर माने गए हैं।

(iii) हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति में 'म' को छोड़कर अन्य विकृत स्वर अपने स्थान से नीचे आते हैं।

(iv) इस पद्धति में प्रत्येक स्वर अपनी प्रथम श्रुति पर माना जाता है।

(v) हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति में शुद्ध मेल (थाट) बिलावल माना गया है।

(vi) इस पद्धति में स्वरों का श्रुत्यांतर 4, 3, 2, 4, 4, 3, 2 माना गया है।

श्रुति विभाजन के क्रम में हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति में षड़ज (सा) को प्रथम श्रुति मानकर स्वर विभाजन किया गया है।

1. प्रश्न : हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति की क्या विशेषताएँ है ?
2. प्रश्न : हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति का प्रचलन देश के किन-किन राज्यों में है ?

◆◆◆